चारों वेदों द्वारा रामस्तुति

जय सगुन निर्गुन रूप रूप अनूप भूप सिरोमने ।
दसकंधराधि प्रचंड निसिचर प्रबल खल भुजबल हने ।।

अवतार नर संसार भार बिभंजि दारुन दुख दहे ।
जय प्रनतपाल दयाल प्रभु संजुक्त सक्ति नमामहे ।।

तव विषम माया बस सुरासुर नाग नर अग जग हरे ।
भव पंथ भ्रमथ अमित दिवस निसि काल कर्म गुननि भरे ।।

जे नाथ करि करुना बिलोके त्रिबिधि दुख ते निर्बहे ।
भव खेद छेदन दच्छ हम कहूँ रच्छ राम नमामहे ।।

जे ग्यान मान बिमत्त तव भव हरनि भक्ति न आदरी ।
ते पाइ सुर दुर्लभ पदादपि परत हम देखत हरी ।।

बिस्वास करि सब आस परिहरि दास तव जे होइ रहे ।
जपि नाम तव बिनु श्रम तरहिं भव नाथ सो समरामहे ।।

जे चरण सिव अज पूज्य रज सुभ परसि मुनिपतिनी तरी ।
नख निर्गता मुनि बंदिता त्रैलोक पावनि सुरसरी ।।

ध्वज कुलिस अंकुस कंज जुत बन फिरत किन लहे ।
पज कंज द्वंद्व मुकुंद राम रमेस नित्य भजामहे ।।

अब्यक्तमूलमनादि तरु त्वच चारि निगमागम भने ।
षट कंध साखा पंच बीस अनेक पर्न सुमन घने ।।

फल जुगल बिधि कटु मधुर बेलि अकेलि जेहि आश्रित रहे ।
पल्लवत फूलत नवल नित संसार बिटप नमामहे ।।

जे ब्रह्मा अजमद्वैतमनुभवगम्य मन पर ध्यावहीं ।
ते कहहुं जानहुं नाथ हम तव सगुन जस नित गावहीं ।।

करुनायतन प्रभु सदगुनाकर देव यह बर मागहीं ।
मन बचनकर्म बिकार तजि तव चरन हम अनुरागहीं ।।

सब के देखत बदेन्ह बिनती कीन्हि उदार ।
अंतर्धान भए पुनि गए ब्रह्मा आगार ।।

विवरण

जो गुण एवं अवगुण से भरे हुए हैं एवं राजाओं के भी राजा हैं, ऐसे श्री राम जी रावण आदि राक्षसों के नाश के लिए अपने हाथों में प्रबल शक्ति रखते हैं ।

श्री राम जी का मनुष्य रूपी अवतार, इस संसार के दुष्टों की शक्ति क्षय करने के लिए हुआ, ऐसे प्रजा के पालक एवं दयावान प्रभु के अंदर जो शक्ति इकट्ठी है मनुष्य एवं नाग के अन्दर विषय के प्रति जो आसक्ति थी, उसका हरण इन्होंने किया एवं जो अपने रास्ते से भटक गये हैं, उन्हें रास्ता दिखाकर एवं उनमें
अपने - अपने कर्म की अनुभूति दिलाकर उन्हें गुणों से भरपूर किया ।

जो सभी विधियों से दुःखी दिखाई देते हैं, उनकी रक्षा करके ये करुना के सागर भव सागर पार किया। जो ज्ञान एवं सम्मान से विमुख हो गये हैं, ऐसे लोगों को ये भक्ति के प्रति आसक्त करके उन्हें, सम्मान प्राप्त करवाया ऐसे दुर्लभ देवता के पद को पाकर हमारा मन हरा भरा हो जाता है ।

जो आप पर विश्वास करते हैं, भरोसा करते हैं एवं आप ही के ऊपर भरोसे मंद हैं, ऐसे श्री राम जी का बिना श्रम के ही नाम जपते रहते हैं, ऐसे लोगों का आप भवसागर पार लगा देते हैं । जिनके चरण की धूल का स्पर्श पाकर पारस पत्थर बनी मुनि की पत्नी अहिल्या बाई तरीं,

ऐसे तीनों लोकों को पवित्र करने वाले श्री राम जी के पद को हम नमस्कार करते हैं ।

वन में वास करते समय या भ्रमण करते समय उनके ऊपर जो भी विपदा आई, जो भी कुठाराघात हुआ परन्तु हर मुसीबतों का उन्होंने सामना किया तथा अपने आप पर अंकुश बनाए रखे, ऐसे श्री राम जी जिनके पैर फूलों से भी कोमल है ऐस श्री राम जी का हम नित्य भजन करते हैं ।

फलों को खाकर एवं बेलि के फूलों में जो काँटे रहते हैं उन्हें सहकर सीता जी अकेली जिनके आश्रित रहीं, ऐसे नित्य संसार के दुःखों का निवारण करने वाले श्री राम जी को हम नमस्कार करते हैं । जो ब्रह्म का नर रूपी रूप बनकर इस संसार के दुष्टों का नाश करने आए हैं, ऐसे राम जी का हम मन से ध्यान करते हैं, हम आपसे क्या कहें नाथ ! आपके यश को हम नित्य ही गाते हैं ।

आप करुना के अवतार हो, सर्व गुण सम्पन्न हो, हम आपसे एक वर माँगते हैं की आप मेरे मन का बचन का एवं हमारे कर्म का जो भी विकार है उनका त्याग करके हमें अपने शरण में ले लीजिए तथा आपके इन चरणों में हमारा प्रेम बना रहे, हमें ऐसा वर दीजिए । आपके इन सब गुणों को देरवते हुए उदार हृदय वाले श्री राम जी की विनती करते हैं, अंत में आप अंतर्ध्यान होकर ब्रह्म में लीन हो गये ।